ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 247-248
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

हरि कृष्ण प्रेमीः एक रचनाकार

डॉ0 सुधा राय

एसो0 प्रो0– अध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, रा0मो0ग0पी0जी0 कॉलेज, फैजाबाद, अयोध्या (उ0प्र0) भारत

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -sudhaashokrai@gmail.com

सारांश : *हरिकृष्ण प्रेमी का जन्म पुराने ग्वालियर राज्य के गुना कस्बे में (जो आज म0प्र0 का एक जिला) सं0–1965 में हुआ। आपके पिता श्री बाल मुकुन्द प्रतिष्ठित वैश्य वर्ग में थे, एवं वकालत करते थे। प्रेमी जी के बड़े भाई श्री गोपी कृष्ण विजय वर्गीय, कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता एवं मध्यभारत प्रान्त के मुख्यमंत्री भी रहे, साथ ही प्रेमी जी के प्रेरणा स्रोत रहे। राष्ट्रीय विचारधारा, विद्रोह की भावना, साहित्यिक अभिरूचि विरासत में मिली।*

कुंजीभूत शब्द– वज्रपात, जननी, होश संभालता, आकांक्षा, तीव्र, प्यास, उपनाम, जीवन व्यतीत।

दो वर्ष की आयु में ही प्रेमी जी की माता का स्वर्गवास हो गया और इस वज्रपात ने हरिकृष्ण को प्रेमी बना दिया स्वयं प्रेमी जी लिखते है– उस समय मैं दो साल का था, जब मेरी जननी मुझे इस पृथ्वी पर पटक कर न जाने किस दुनियां में चली गयी। ज्यों–ज्यों मैं बड़ा होता गया, होश संभालता गया, मेरे हृदय में इस प्रकार की आकांक्षा तीव्र होती गयी कि कोई मुझे खूब प्यार करें, मेरी इस प्यास को कोई शान्त न कर सका। इसी कारण अपना उपनाम स्वयं प्रेमी रखा। प्रेम बांटने में अपना जीवन व्यतीत किया आगे वे लिखते हैं–

''अनेक निराश क्षणों में, मैंने अपने आप को को किसी अदृश्य शक्ति के चरणों में समर्पित कर दिया, और उसने मुझे बल प्रदान किया तब से आज तक सताईस वर्ष बीत गये मैं आज तक अनुभव करता हूँ, वही दो वर्ष का शिशु हूँ। मुझे इस कल्पना से सुख मिलता है कि कोई अदृश्य मुझे अपनी गोद में लिये बैठा है। उस समय मुझे मां का दूध चाहिये था– इस समय भगवान् प्रेम पिला रहा है, मेरी यह धारणा सच हो या गलत मुझे जीवित रहने का बल देती है।''

प्रेमी जी ने बड़ी ही रोचक घटना का वर्णन किया है, निश्चित पाठको को प्रेरित करने का बीज मंत्र है– ''साहित्य सृजन का नशा मेरे विद्यार्थी जीवन में मुझ पर इस कदर सवार था कि एक दिन ग्वालियर में विक्टोरिया कालेज में द्वितीय वर्ष (इण्टरमीडिएट) की परीक्षा देने गया, तो मार्ग में कविता लिखने बैठ गया। जब कविता समाप्त हुयी तो ज्ञात हुआ कि परीक्षा भी समाप्त हो चुकी थी, और उसी दिन मैंने विद्यार्थी जीवन को नमस्कार कर दिया।''

इस घटना के समय उम्र 19 वर्ष 1926–1928 के लगभग केन्द्रीय राज्य के मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय ने प्रेमी जी को अजमेर बुला लिया और उन्होंने 'त्याग–भूमि' नामक पत्रिका का प्रेमी जी को सहायक सम्पादक बनाया। 1930 में राष्ट्रीय आन्दोलन की यात्रा में जेल की भी यात्रा हुयी, पं0 माखन लाल चतुर्वेदी ने कर्मवीर का सम्पादन प्रेमी जी से कराया। पारिवारिक पृष्ठभूमि में प्रेमी जी की सात सन्तानें (पुत्र) चार पुत्रियों का संसार रहा है।

बचपन के प्रेम के अभाव ने उन्हें परमात्मा प्रेम और परमात्मा प्रेम ने व्यापक प्रेम की ओर अग्रसर किया, और पुनः प्रेम ही प्रेमी का जीवन हो गया। प्रेमी जी ने बटुक जी से (विश्वप्रसाद दीक्षित बटुक) कहा था– ''मेरे इस छोटे से जीवन काल में कई बार ऐसे अवसर आये, जब मुझे अपना अस्तित्व असहाय ज्ञात हुआ है। जब मैं उसे भूल जाता हूँ, तो मुझे अपना भार संभालना असंभव हो जाता है, और अपने ही हाथ में अपना गला घोट देने की इच्छा होती है।'' कई आघात सहने के कारण कुछ लोग उन्हें 'वेदनावतार' कहकर पुकारते थे। प्रेमी जी ने कभी किसी से बदला नहीं लिया बल्कि सबके दोषों को क्षमा करने की सामर्थ्य रखते थे।

वे सरल थे, उतने ही सादगी पसन्द थे– ''पिण्डलियों के कुछ ऊपर बल खाती धोती, बिना प्रेस किया हुआ कुर्ता और उसी डिजाइन की पेशावरी चप्पल आज भी उनकी वेश–भूषा है, जो किशोरावस्था में थी। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद अंग्रेजियत फैली, लोगों ने धोती कुर्ता, पायजामा त्यागकर कोट–पैन्ट नेक टाई लगाई पर प्रेमी जी ने न तो कुछ त्यागा और न कुछ अपनाया। वे जैसे अकृत्रिम, आडम्बरहीन भीरत से हैं वैसे ही बाहर से भी।'' इनमें ब्राहम्णों के समान त्याग तथा परोपकार की भावना थी मनस्वी ऋषियों के समान मानव–मात्र में समान दृष्टिगत थे।

'बेटी की विदा' नामक कविता का अंश
खड़ी हुयी ऊँची दीवारें मानव से मानव को करती है,
जो दूर निरन्तर धर्म जाति, विश्वास सड़े से परम्परायें,
मर्यादायें, गर्व रक्त का। और न जाने क्या–क्या बाँट
रहे मानव को जो' करना है निर्मूल उन्हें अब, मानव
मात्र एक हो जिसमें।

प्रेमी जी स्वयं लिखते है– ''कबीर ने माया को महाठगिनी कहा है। इसी ठगिनी माँ को मैने जादूगरनी कहा है। इसी जादूगरनी के विविध रूपों का षब्दों द्वारा अंकन किया है। यही माया प्रत्येक भवन में नारी बनकर अपनी, अभिरामछवि, आलोकित करती है। जादूगरनी की

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

भूमिका हरि कृष्ण 'प्रेमी' साहित्यकार का व्यक्तित्व इतना व्यापक होता है, कि सम्पूर्ण विश्व उसके विराटत्व में प्रवेश पा जाता है।

प्रेमी जी के ऐतिहासिक नाटक–(1) रक्षा बन्धन, शिवा साधना, प्रतिशोध, स्वप्न–भंग, आहुति, मित्र, शतरंज के खिलाड़ी, विषपान, उद्धार शपथ, भग्न प्राचीर, प्रकाश स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, विदा, संरक्षक, सांपो की सृष्टि इत्यादि अगणित नाटक लिखे। इनके नाटकों के क्रम सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक के अन्तर्गत विभाजित है। (बादलों के पार सेवा मन्दिर) 1952 उसमें 11 एकांकी नाटकों का संग्रह है। गीति नाटक (रंगमंचीय) स्वर्ण विहान (सामाजिक) रेडियो रूपक (संगीत नाटिकायें) पंजाब की प्रीति कहानियां अनकेशः विधाओं में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

काव्य– 1. आँखे 2. रूप दर्शन 3. वन्दना के बोल 4. रूपरेखा 5. जादूगरनी 6. अनन्त के पथ पर 7. अग्निगान 8. प्रतिमा इस तरह अनेकशः विधाओं में विचारधारा जलकुंभी की तरह साहित्य सरोकर में फैली हुयी है।

'उत्साह, शक्ति और कल्पना में युवकों को मात देने वाले वाले'' साहित्यकार के दुर्भाग्य से संघर्ष के थपेड़ों को सहते हुये भी निरन्तर प्रत्येक क्षेत्र में प्रकाशित रहने वाले प्रज्ज्वलित प्रेम प्रदीप प्रेमी जी 22 जनवरी 1974 की सन्ध्या बेला में स्वर्गवासी हो गये। देवावसान के पूर्व मित्रों, सहायकों तथा परिवार जनो से उपेक्षित एवं मन से दुःखी एकदम रिन्द से हो गये थे, अपने गम को भुलाने के लिए वारूणी की शरण में भी समर्पित हुये। जो कुछ भी हो समाज का भी कर्तव्य साहित्यकार के प्रति जुड़ा है। ''विश्व वसुधैव कुटुम्ब'' को नमन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनन्त के पथ पर– हरि कृष्ण प्रेमी (भूमिका से)।
2. हरि कृष्ण प्रेमी नाट्य शिल्प– सरोज विसारिया प्रथम संस्करण 1999.
3. समाज सुधार के लिये मेरे संघर्ष 'निबन्ध' – हरिकृष्ण प्रेमी।
4. हिन्दी नाटककार – डॉ0 जय नाथ नलिन।
5. नाटककार – हरिकृष्ण 'प्रेमी' – विश्वनाथ दीक्षित 'बटुक'।
6. मैं इनसे मिला – डॉ0 पद्म सिंह शर्मा कमलेश।

*****